बिहार विधायिका सभा वादवृत्त

शुक्रवार, तिथि - २५ मार्च १९४९

विषय सूची

	पृष्ठ
प्रश्नोत्तर	१-३
विधायिका परिषद् से प्राप्त संदेश	४
आय-व्ययकः अनुदानों के अभियाचन पर मतदान। ...	४-१४
शिक्षा [स्वीकृत]	१४
२६ मार्च के कार्य सूची में परिवर्त्तन।	१४
आय-व्ययकः अनुदानों के अभियाचन पर मतदान। ...	१४-३०
[अपरान्ह की दूसरी बैठक — ६-१५ बजे।] ...	३१
विधायन कार्य : राजकीय विधेयक : ...	३१
बिहार फाइनेन्स बिल, १९४९, [१९४९ का वि: स० १०] (क्रमशः)	३१
बिहार फाइनेन्स बिल सभा के अधिकार के बाहर है या नहीं तथा बिहार एग्रीकल्चरल इन्कम टैक्स ऐक्ट १९४२ के बिना संशोधित हुए, बिहार फाईनेन्स बिल सभा में आ सकता है या नहीं, इन सब नियमापत्तियों पर माननीय प्रमुख का निर्णय। ...	३०-४०
बिहार फाइनेन्स बिल १९४९, [१९४९ का वि० स० १०] [स्वीकृत हुआ]	४०

प्राप्त जल के परिमाण	...	...	१२३५'४ लाख गैलन।
झील में ...	...	...	७१ फी० ६ इं० के जल-तल तक सुरक्षित जल का परिमाण ११४० लाख गैलन।
कमी...	...	...	६५'४ लाख गैलन

इसलिए खान के पानी को साफ और स्वच्छ करके उस कमी को पूरा करना पड़ता है।

श्री पुरुषोत्तम चौहान : क्या यह सच है कि हर वर्ष तोपचांची तालाब में पानी कमती होता है।

माननीय पण्डित विनोदानंद झा : यह बात तो हमेशा के लिए है।

श्री पुरुषोत्तम चौहान : क्या यह सच है कि उस तालाब में पानी नहीं है ?

माननीय पण्डित विनोदानंद झा : उस तालाब का पानी वर्षा पर निर्भर करता है। वर्षा कम हुई है इसलिए पानी कमती है।

श्री पुरुषोत्तम चौहान : आठ, नव वर्ष पहले पानी होता था। कोलफील्ड में जितना पानी चाहिए उतना अब नहीं होता है। जब पानी कम होता है तो उसको पूरा करने के लिए सरकार के पास कोई Supplementary scheme है ?

माननीय पण्डित विनोदानंद झा : इसके बारे में सरकार विचार कर रही है।

श्री पुरुषोत्तम चौहान : दामोदर स्कीम से पानी लेने की बात सरकार के सामने है ?

माननीय पण्डित विनोदानंद झा : सरकार हर तरह से पानी पहुँचाने के लिए विचार कर रही है।

बि० म० मु० (एल० ए०) ७—२७५—६-४-१६४६—A. T.

लिफ्ट इरिगेशन प्रोजेक्ट द्वारा बाढ़ और बिहार में काम

*२८०। *श्री देवशरण सिंह :* क्या माननीय मंत्री, लिफ्ट इरिगेशन स्कीम विभाग, यह बताने की कृपा करेंगे—

---

* सदस्य की अनुपस्थिति में श्री जमुना प्रसाद सिंह के निवेदन करने पर उत्तर दिया गया।

(क) क्या लिफ्ट इरिगेशन स्कीम प्रोजेक्ट द्वारा पटना जिले के बाढ़ और बिहार सबडिवीजन में सिंचाई का काम प्रारम्भ हो गया है;

(ख, यदि खंड (क) का उत्तर स्वीकारात्मक हो तो क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि सन् १९४८ में कितने बिगहों की सिंचाई लिफ्ट इरिगेशन योजना द्वारा हो सकी है;

(ग) क्या सरकार के सामने लिफ्ट इरिगेशन प्रोजेक्ट बख्तियारपुर से पूरब की ओर मोकामा तक विस्तार करने की कोई योजना है;

(घ) यदि खंड (ग) का उत्तर स्वीकारात्मक हो तो क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि उपर्युक्त योजना कबतक चालू हो सकेगी और इस संबंध में अभी तक कहाँ तक काम बढ़ सका है ?

माननीय श्री रामचरित्र सिंह :

(क) उत्तर हाँ है।

(ख) सन् १९४८ में इन सबडिवीजनों में ७, ४५४ एकड़ जमीन की सिंचाई हुई।

(ग) उत्तर हाँ है।

(घ) जो चीजें हिन्दुस्तान में मिल सकती थीं वे तो इकट्ठी कर ली गई हैं, दूसरे आवश्यक यन्त्रादि सामान जैसे पम्प, ट्रान्सफर्मर आदि जो बाहर से मंगाने पड़ेंगे उनके लिए आर्डर जा चुका है। ज्योंही सामान आ गये, काम शुरू कर दिया जायेगा।

श्री जमुना प्रसाद सिंह :—आपने सिंचाई के लिए तीन इञ्च पानी दिया है। मैं जानना चाहता हूँ कि साधारण तौरपर कितने इञ्च पानी देने की जरूरत होती है।

माननीय श्री रामचरित्र सिंह : यह सवाल नहीं उठता। किसानों को सिंचाई के लिए जितने इञ्च पानी की जरूरत होती है, दिया जाता है। सन् ४८ में ७, ४५४ एकड़ जमीन की सिंचाई हुई है। इसमें कोई सवाल उठाने की गुंजाइश नहीं है।

श्री जमुनाप्रसाद सिंह : सवाल ठीक है। सरकार ने अभी बतलाया है कि ७४५४ एकड़ जमीन की सिंचाई हुई है। मैं जानना चाहता हूँ कि सिंचाई किस तरह की हुई है। क्या सिर्फ जमीन भींगने के लायक हुई है या कितना इञ्च पानी दिया गया है।

माननीय प्रमुख : उत्तर दिया गया है कि जितनी जरूरत हुई उतना पानी दिया गया है। क्या आप पानी की मेकदार जानना चाहते हैं ?

श्रीजमुना प्रसाद सिंह : साधारण तौर से एक इञ्च या तीन इञ्च पानी दिया जाता है।

माननीय श्री रामचरित्र सिंह : यह सवाल उठता ही नहीं, लेकिन अगर आप जानना चाहते हैं तो मैं यह आपको बता देना चाहता हूँ कि जिस खेत में एक इञ्च पानी की जरूरत हुई उसमें एक इञ्च दिया गया और जहाँ ९ इञ्च की जरूरत हुई वहाँ वह ९ इंच दिया गया और जहाँ ३½ इञ्च की जरूरत हुई वहाँ ३½ इञ्च दिया गया।

सरदार हरिहर सिंह : जो सवाल मैंने पूछा था उसके Language को बिना हमें दिखाए हुए बदल दिया गया है। इसलिए मैं यह सवाल पूछना नहीं चाहता हूँ।

माननीय प्रमुख : कहाँ पर Change किया गया है।

सरदार हरिहर सिंह : Original तो हमारे पास नहीं है। हुजूर के ऑफिस में ही होगा, देख लिया जाय।

१९४६ में कुँओं की खुदाई के लिए शाहाबाद जिले को ३०,००० रुपये की स्वीकृति।

२८२। *श्री जगन्नाथ सिंह :* क्या जनस्वास्थ्य विभाग के मंत्री बताने की कृपा करेंगे—

(क) क्या यह सच है कि शाहाबाद जिले में कुओं की खुदाई के लिए १९४६ में ३०,००० रुपये मंजूर किये गये थे;

(ख) क्या यह सच है कि कुएँ खोदने की जगहें ठीक कर ली गय थीं, पर अभी तक एक भी कुआँ खोदा नहीं गया है;

(ग) क्या यह सच है कि शाहाबाद जिला बोर्ड के पास कोई सूचना नहीं भेजी गई कि उस जिले के लिए ऊपर बताई रकम मंजूर की गई थी;

(घ) यदि खंड (क) से (ग) तक के ऊत्तर 'हाँ' हो तो इस देरी के कारण क्या है और कुओं के जल्द खुदवाने के विषय में सरकार ने कौन-सी कार्रवाई की ?